शिवाजी विश्व विद्यालय

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
द्वारा एम.फिल. उपाधि के लिये,

लघु प्रबंध - १९८१.

लक्ष्मी नारायण मिश्र के सामाजिक नाटकों और दार्शनिक [illegible] अध्ययन

मार्गदर्शक
डॉ. [illegible] दुबे,
अध्यक्ष,
हिंदी विभाग, धारवाड़,
कर्नाटक विश्वविद्यालय।

अनुसंधाता
प्रा. [illegible]
हिंदी विभाग प्रमुख,
...रवाई कॉलेज ऑफ एज्युकेशन
सोलापुर
म हा रा ष्ट्र

एम. फिल.

Phone : 8194 Ext. 250

K A R N A T A K ~~S E A L~~ U N I V E R S I T Y

Department of Hindi

Ref No. Date : 21-5-81

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि कु. नसीम पठान ने एम्.फिल् उपाधि के लिए यह प्रबंध मेरे मार्गदर्शन में लिखा है। यह उनकी मौलिक रचना है। यह लघु-प्रबंध पूर्व योजना के अनुसार लिखा गया है।

चन्द्रलाल दुबे

डॉ. चन्द्रलाल दुबे
निर्देशक
भूतपूर्व स्नातकोत्तर हिंदी प्राध्यापक
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
तथा
प्रोफेसर, हिंदी विभागाध्यक्ष, --
कर्नाटक विश्वविद्यालय,
धा र वा ड

-: विषयानुक्रमणिका :-

पृष्ठ क्रमांक

प्रस्तावना :-

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंधकी विशेषताएँ — १ - ७

कृतिवेदन

अध्याय पहला :- — ८ - ७५

१) जीवन परिचय

२) मिश्रके जीवनके कुछ उल्लेखनीय अवसर

३) मिश्रका वाङ्मय

४) मिश्रके नाटकोंका वर्गीकरण

५) मिश्रके समस्या नाटकोंका परिचय

६) मिश्रके समस्या नाटकोंके पात्रोंका सामान्य परिचय

७) मिश्रके सांस्कृतिक नाटकोंका परिचय

८) मिश्रके समस्या नाटकमें व्यक्त समस्याएँ

९) मिश्रके सामाजिक नाटकोंके विशिष्ट वर्गमें अंकित स्त्रीके चरित्रोंका विश्लेषण

अध्याय दूसरा :- — ७६ - ९७

मनोविज्ञान :- सिद्धांत एवं तत्व

१) मनोविज्ञान - सिद्धांत पक्ष और साहित्य

२) मनोविज्ञान शास्त्रका उदय

३) विभिन्न संप्रदाय और उनका दृष्टिकोण

४) मनोविज्ञानके प्रमुख सिद्धांतोंका साहित्यसे संबंध

५) साहित्यका वर्तमान युग

..2

पृष्ठ क्रमांक

६) हिंदी नाटकों अभिव्यक्त नैतिक
प्रेमकी पृष्ठभूमि

७) २० वी शताब्दी के स्वातंत्र्य नाटककारोंका
मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

८) परिशिष्ट

१) मूल ग्रंथ-सूची

२) लेखक द्वारा प्रतिपादित मूल ग्रंथ-सूची

३) Our Primary wants.

प्रथम अध्याय :- ९८ - १२७

भारतीय नारी और नारी मनोविज्ञान

१) भारतीय नारी - भारतीय संस्कृति की परंपरा
एवं विशेषताएँ

२) नारी मानसिकता क्रमिक विकास

३) हिंदी नाटक तथा नारी चरित्र
एवं प्रकार

४) नारी :-
नारी मनके पृष्ठभूमिपर

५) मध्यम वर्गीय नारी

द्वितीय अध्याय :- १२८ - २६४

लक्ष्मी नारायण मिश्रके सामाजिक नाटकोंके नारी
पात्रोंका मनोवैज्ञानिक अध्ययन

१) लक्ष्मी नारायण मिश्रके सामाजिक नाटक तथा
नारी पात्रोंके नाम

१) संन्यासी १) मालती

(१९२७) २) किरणमयी

(संस्करण प्रथम)

.. ३.

पृष्ठ क्रमांक

२) राक्षस का मंदिर
(१९३२) १) अशगरी
२) दुर्गा
३) ललिता
(संस्करण प्रथम)
३) मुक्ति का रहस्य
(१९३२) १) आशादेवी
(संस्करण प्रथम)
४) सिंदूर की होली १) मनोरमा
(१९३४) २) चंद्रकला
संस्करण - पंचम
५) राजयोग १) मनोरमा
(१९३४) २) चंद्रकला
संस्करण तृतीय
६) आधी रात १) मायावती
(१९३४)
संस्करण

अध्याय पाँचवा : २६५ - २६६.

उपसंहार
संदर्भ ग्रंथ सूची २६७ - २७३.

प्राक्कथन :-

बीसवी सदीमें मनोविज्ञानकी शाखाओंका अधिक मात्रामें विकास हुआ है । मनोविज्ञानका एक स्पष्ट रूप हमारे सामने आ चुका है जिसका परिणाम जीवनके हर एक क्षेत्रमें हम देख सकते है । मनोविज्ञानकी इन विभिन्न शाखाओंमेंसे ही एक शाखा है । मनोविश्लेषण पध्दती । जो एक नई प्रणाली है । मनोविज्ञानके सिध्दांतोंको आँखोंके सामने रखकर साहित्यकारोंने भी कुछ साहित्य निर्मिती की है । श्रेष्ठ साहित्यिक रचनाओंको जन्म दिया है । इन रचनाओंमेंसे मनोविज्ञान के सूक्ष्म - तिसूक्ष्म पहलुओंके साथी प्रभावी स्वरुप सिध्द किया है । विशेषतया "नारी मनो - विज्ञान" तथा नारी मनका विश्लेषण अपना एक विशेष स्थान है । लक्ष्मी - नारायण मिश्र जैसे श्रेष्ठ नाटककारभी इससे अछूते नहीं रह पाये । अपने सामाजिक नाटकोंमें उन्होंने इन बातोंकी झलक दिखा दी है । लक्ष्मी नारायण मिश्र, जो प्रमुख नाटककार है । पर स्त्री मनके अनेक पहेलियोंको सुलझा देते है । इनके स्त्री पात्र "यथार्थ" से भरे है । नारी जीवनकी गहराई व्यक्त करते है । नारीके जीवन तथा मनमें उठने वाले कई कुप्रश्नोंको रास्ता दे देते है । नारी क्या है क्या वह सिर्फ उपभोग्य वस्तु है । क्या वह अबला है । क्या वह सबला हो सकती है । क्या उसका भी कोई अपना मन है क्या वह मन चेतन रूप में कभी जागृत रहता है । क्या अचेतन मनमें भी कुछ न सुलझनेवाले प्रश्न लिये वह जीवन बिताती है । नारी कौन है । आखिर वह चाहती है क्या? स्वातंत्र्य स्वैराचार केवल शरीर सुख या इन सबसे कुछ और इसप्रकारके कोई नही प्रश्नोंका सुलझाव है । लक्ष्मीनारायण मिश्र के नारी पात्र, विशेष रुपसे सामाजिक नाटकोंके नारी सौंध महल की सखी सजाई गुडियाँ ही नही है । जिस प्रकार पंछी को सोनेका पिंजडा सुख नही देता नारीकी हालत भी इस सोनेकी चिडीयासे है । पर मिश्र इन सबके आगे बाहर जाना चाहते है । नारीके प्रति उनकी भावना, उनकी दृष्टी, उनका विचार कुछ और है । जबकि हम इनके स्त्री पात्रोंको उनकी दृष्टीसे नही देख पाते, हम नारीकी महत्ता समझाने मे पिछडे रहते है । मिश्र के सामाजिक नाटकोंका अध्ययन करते है बाद नारी मनको तथा उनकी विशेषतायोंको हम स्पष्ट करके समझ सके । यहाँ मानसशास्त्रीय दृष्टीकोनसे विचार किया गया है ।

प्रथम अध्यायमें लक्ष्मी नारायण मिश्रके जीवनका सामान्य परिचय दिया है । आधुनिक मिश्रके समस्या नाटकोंका परिचय तथा समस्यानाटकोंके पात्रोंका सामान्य परिचय भी शब्दांकित किया है । समस्या नाटकोंमें अभिव्यक्त समस्याए तथा शोध प्रबंधसे संबंधित विषयोंसे अधिक निकटका संबंध रखते है ।

अध्याय दूसरेमें मनोविज्ञानके तत्व एवं सिद्धांतोंका विवेचन किया है । हिंदी नाटकमें मनोविज्ञानके प्रवेश की पृष्ठ भूमिका को भी सामने रखा है ।

अध्याय तिसरे में भारतीय नारी तथा उसका महत्व भारतीय संस्कृतिका महत्ता एवं विशेषताएं है नारी, मनके पृष्ठ भूमिपर अभिव्यक्त हुयी है । भारतीय नारी जातीका क्रमिक विकास भी दिया गया है । जो वैदिक कालसे आजतक विचारसे किया गया है ।

अध्याय चौथेमें अति विस्तार रूपमें लक्ष्मी-नारायण मिश्रके सामाजिक नाटकोंके नारी पात्रोंके । मनोवैज्ञानीक अध्ययन किया गया है । जिसमें कुल मिलाकर मिश्रजी के नाटकोंको लेकर प्रत्येक नारी पात्रका मनोविज्ञानीक विश्लेषण किया है । कुल मिलाकर नारी पात्र ग्यारह है । इन सामाजिक नाटकोंमें सन्यासी, राक्षसका मंदिर, मुक्तिका रहस्य, सिंदूरकी होली, राजयोग, आधीरात आदि नाटकोंका विचार भी किया गया है ।

" सन्यासी " में मालती का मनोवैज्ञानीक पहलूके आधारपर विश्लेषण किया गया है । मालती नारी उच्च भावनाओं भरी है । मानसिक द्वंद्व उसके मनमें बारंबार उठते भी है पर फिर भी वह परिस्थितीके सामने नही है हारते हुये उसका त्यागकी प्रवृत्तीसे अधिक दिखती हुयी है ।

जीवनमें समर्पित भावनाका महत्व उसने जाना है । त्यागमेंही जीवन महान बनता है । उसका पूरा पूरा अहसास उसे हुवा है । वासना रहित प्रवृत्तीको वह अपने जीवनमें महत्व देती है । तथा आदर्श वादी कृतीयों उसका पर तत्व ज्ञानी की भूमिका भी निभाती है । इतना होनेमें बावजूद भी कभी कभी मालती पश्चाताप आधाराने दुर्बलताओंके सामना देती हो मालती को अच्छी तरहसे याद है कि, मैं वह एक नारी है । जो नारी उच्च भावनाओंका एक प्रतीक है ।

"संन्यासी" नाटकका दूसरा नारी पात्र है । किरणमयी । मालतीके समानहि वह भी नारी सुलभ भावनाओंसे परिपूर्ण है । स्वच्छन्दता स्वभाव होनेके बावजूद उसका अंतर्भाव जो उसके चरित्रसे थोडासा अलग रेखांकित करता है । निस्वार्थी वृत्ति वृत्तीका वह है । अवश्य पर कभी कभी अपने जीवनमें पश्चाताप की अग्नीमें भी जलती रहती है । औरोंको उपकारी की वृत्तीसे वह देखती है पर किरणमयीके मनपर आधुनिक विचार धाराका प्रभाव भी अवश्य रहा है जीसकी संदीग्ध नारीके विचार यथार्थ किरणमयी ऐसाभी कभी कभी स्पष्ट होता है ।

राक्षसका मंदीर नाटकमें अशरफी एक महत्व पूर्ण नारी पात्र है । जो मानवता वादी तथा धार्मिक वृत्ती की है । धर्म निरपेक्षताकी भावना उसमें ठूंस ठूंस कर भरी है । जीवनके यथार्थ उसने सिर्फ पढ़ें नहीं बल्कि अनुभव किया है । अपने जीवनको उसने लिए समर्पित हो फिर भी निराशा का स्वर उसके वर्तनमें कभी कभी झलकता है । पश्चाताप क्याके मारे वह अपने आपको क्षमा नहीं पाती । समय आ पडने पर औरोंको समाप्त कर वह जीवीत रहना चाहती है । उद्विग्नताकी परी सीमा यही है की वह मरण - प्रवृत्ती को भी अलिंगन देकर अपना जीवन खुदा समाप्त करना चाहती है । ताकि दूसे उसकी तनीक कुछ समाप्त ना कर पाये । उसके जीवनका इतिहास एक "अजिब किस्सा" है ।

राक्षसके मंदिरका दूसरा नारी पात्र ललिता है । जो शुध्द भारतीय वृत्तीकी धार्मिकतासे भरी प्रेम भावनासे परीपूर्ण पति की श्रध्दा पूर्ण पूजा करनेवाली भारतीय पत्नी है । वह स्वच्छन्दता पक्षा है । निस्वार्थी वृत्तीसे वह रहती है । स्वभाव वैचित्र्य उसमें है । फिर भी वह भारतीय नारी होनेके कारण देववादी विचार - धाराओंको अपनाती है । औरोंको समझने की प्रवृत्ती उसमें है ।

मुक्ती नाटक का तिसरा पात्र है । दुर्गावती भारतीय नारी के गुण विशेष उसमें है । मानसीक द्वंद तथा अतिशुष्णावस्था में वह जब फंस जाती है । अपने आप पर कोई काबू नहीं रख सकती । भारतीय नारी होनेके कारण वह सहनशील भी है ।

मुक्तिका रहस्य नाटकमें आशा देवी अपना एक अलग स्थान रखती है वह देव वादी तत्वज्ञानी, कृतनिश्चयी, मानवतावादी स्वार्थी प्रवृत्तीकी भी महत्वप्रधान करती है । आशा देवीमें वर्चस्व करनेकी भावना अधिक है । वह स्वच्छन्दता भी स्वीकार

आशावादी मनकी कल्पना तथा मानवीय [illegible] मिश्रित है । इसी कारण उसे स्वभाव वैभिन्न है । यदि वह [illegible] बिंदा रखना चाहती तो कभी स्वयं वे [illegible] समाप्त करना चाहती है ।

जिंदगी होती मानकी मनोरमा [illegible] पूर्ण स्थान रखती है । अनेक गुणों से परिपूर्ण ऐसा उसका व्यक्तिमत्व है । फिर भी मनोरमा नारी है । नारी भावनासे परिपूर्ण है । जीवनमें वह आशावादी है । मानवता वादी तथा [illegible] आस्तिकवादी वह है । इसी कारण वह धार्मिक भी है । विचारधारा तथा निर्मल प्रेमी, [illegible] प्रेमी, वह होनेके कारण भावनाओंका उतना [illegible] वह करती है । मनोरमा सर्ववादी है । फिरभी उसमें अटल विश्वास है । [illegible] विशुद्ध प्रेम ही सच्चा प्रेम है । [illegible] अनुभव मिला है । त्यागी वृत्ति उसने समय समय पर अपनाई है [illegible] है । इसी कारण उसके जीवनमें निराशावाद उसे मिला [illegible] तत्व आशा मनोरमा सामाजिक मर्यादा [illegible] रखती है ।

दूसरा नारीपात्र [illegible] है । उसके मनपर भारतीय [illegible] है । [illegible] नारीके मनकी [illegible] नहीं [illegible] वह इसलिये स्वभाव भी है । मानवीय [illegible] आत्मना [illegible] है । [illegible] चारित्र्य की प्रवृत्तियाँ है । मनोरमासे [illegible] वह [illegible] है । वह [illegible] है । पाश्चात्य विचार धारका प्रभाव है । [illegible] वह [illegible] करती है । जीवनसे [illegible] है । और [illegible] नहीं कर पाती तब वह मरणोत्सुक है ।

राजयोग नाटकमें [illegible] आत्मज्ञान [illegible] तथा [illegible] भावनासे परिपूर्ण है । [illegible] प्रेमी [illegible] प्रेमी होकर स्वाभिमानी [illegible] है । पर [illegible] वह [illegible] है । जीवनकी घोर निराशा उसका [illegible] है । इसी कारण मानवीय संस्कारों से वह [illegible] नहीं पाती । [illegible] भावनाएं होने [illegible] भी नारी [illegible] भावनासे वह परिपूर्ण है । समय पड़ने पर मरण के सिवाय उसे कोई चारा नहीं है । मृत्यु से [illegible] नहीं है ।

आधी रात नाटकमें [illegible] भारतीय [illegible] है । नारी [illegible] प्रति उसे आदर है । [illegible] उसे प्रेम है । प्रेम भावनाके [illegible] आपको [illegible] है, तब उसकी [illegible] हो जाती है । [illegible] मानसीक [illegible] का प्राबल्य होता है । [illegible] स्वातंत्र्य विचारवादी [illegible] है ।

[illegible] UNIVERSITY [illegible]

मानवतावादी वृत्ती उनमें पारिवारिक है। नाना लोगोंपर भी और एक विशेषताः पात्र का प्रभावी, प्रभावी, तथा लोकप्रिय बनाता है। अंत में [illegible] कहीं। बोलते बोलते आत्म [illegible] बोध देती है।

पाँचवा अध्याय उपसंहार है। तथा अंत में ग्रंथ सूचि दी गयी है।

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंधकी विशेषतायें.

१) लक्ष्मी नारायण मिश्रजीके सामाजिक नाटकोंके नारी पात्रोंका मनोवैज्ञानिक अध्ययन विश्लेषण करनेका यह शोध प्रबंधमें पहला प्रयत्न हुआ है ।

२) मनोवैज्ञानिक अध्ययनको सविस्तार रूपसे समझानेके लिये मैंने किस प्रकार मानवी भावनाओंका विकास तथा व्यक्तित्व अभिव्यक्त करता जाता है । तथा विविध चारित्रिक विशेषताएं ये आती है । इससे संबंधित प्रमाणधारोंपर लिया है । तथा उसी प्रकारसे विषय सामग्री प्रस्तुत की है ।

३) मनोवैज्ञानिक दृष्टीसे एवं चारित्रिक विशेषताओंकी दृष्टीसे सामाजिक नाटकोंका अध्ययन किया है ।

४) लक्ष्मी नारायण मिश्र, इनके सारे नाटकका मूल्यांकन संपूर्णतया हम नहीं कर सके इसलिये उनके विविध नाटकोंसे सिर्फ सामाजिक नाटकोंका तथा उसमें भी केवल नारीपात्रोंका ऊपर उनका मनोवैज्ञानिक दृष्टीसे अध्ययन किया है ।

५) मिश्र के सामाजिक नाटकोंका काफी गहरा तथा विस्तृत अध्ययन लघुशोधप्रबंध लेखनके रूपमें भी किया है ।

६) लक्ष्मीनारायण मिश्र के सामाजिक नाटकोंका नारी पात्रोंका मनोवैज्ञानिक अध्ययन शिवाजी विश्व विद्यालयमें यह विषय प्रथम बार ही एक अनुसंधाताने किया है ।

७) अनुसंधात्री स्वयं नारीजातीसे परिचित है । इसलिये मिश्रजीके नारी पात्रोंको अधिक स्पष्ट करनेका सार्थक प्रयत्न किया है ।

ऋण निर्देश :-

मेरे श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. चंदलाल दुबेजीके सानिध्यमें, उनके आशीर्वाद तथा मार्गदर्शनसे मेरा लघुप्रबंध उत्तमतासे पूर्ण कर सकी । समय समयपर उन्होंने मुझे विश्वास देता दिया । [illegible] उसीके बलबूतेपर लघु प्रबंधका काम मैं पूर्ण कर सकी । मेरे आदरणीय गुरु डॉ. दुबेजीका आभार नहीं मानो मुझे यह इच्छा [illegible], उनका ऋण रखनेमें मैं अपना धन्य समझूँगी ।

डॉ. [illegible] दुबेजी, [illegible]जी ने भी मुझे मार्गदर्शन देकर उपकृत किया है । लघु प्रबंध का कार्य करते वक्त कई बार मैं हताश हुई, मेरे महाविद्यालयके प्राचार्य श्री. टी. बी. [illegible] तथा मेरे सहकारी बहन प्रा. सौ. [illegible] कुलकर्णी, प्रा. मधुकर कुलकर्णी, डॉ. [illegible], डॉ. निर्मलकुमार [illegible], प्रा. [illegible]. मेरी पूज्य माताजी श्रीमती [illegible], [illegible] मुझे साहस दिलाती रही मेरे [illegible] श्री [illegible]रावजी [illegible] तथा [illegible] सौ. [illegible]देवी [illegible] उन्होंने भी [illegible] मुझे मदद की । उनके भी [illegible] आभार मानना मेरा परम कर्तव्य है ।

दयानंद महाविद्यालय, सोलापुर शिवाजी विद्यापीठके ग्रंथालय विभाग - प्रमुख श्री. [illegible] तथा श्री [illegible], सोलापूर [illegible] ग्रंथपाल [illegible] आभार [illegible] [illegible] श्री. [illegible] ने शोध प्रबंध [illegible] [illegible] तथा [illegible] प्रकारसे किया उनकी भी मैं आभारी हूँगी

प्रिय [illegible] (सौ. [illegible]) [illegible] मैं [illegible] हूँ । मेरे [illegible] आशीर्वाद [illegible] भी मेरे [illegible] है ।

कुछ त्रुटियाँ इस शोध प्रबंधमें रहनेके बावजूद भी [illegible] लघु प्रबंधको पूर्ण [illegible] प्रयास किया है । [illegible] [illegible] [illegible] जो इन त्रुटियोंको दूर करनेका प्रयास करूँगी ।

[illegible] मैं कुछ [illegible] लेखकों एवं मित्रोंके प्रति [illegible] हूँ ।

Pathan. N.M.

(प्रो. नसीम पठान)

हिंदी विभाग [illegible] कॉलेज [illegible],

सोलापूर.

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR